Padma Shri

SMT. R. MUTHUKKANNAMMAL

Smt. R. Muthukkannammal, is the last surviving paradigm for the Devaradiyar conception followed less than a century ago in the present day state of Tamil Nadu. She is amongst the last few women who identify themselves as "Devadasi" and belongs to the hereditary communities which had per-formative traditions of Temple and Court dancing known as Sadir. Bharathanatyam is the reimagined /reinvented form of Sadir. Smt. Muthukkannammal is the only living Sadir dance exponent in India. Smt. Muthukannammal serves as a repository of knowledge teaching us about the hoary history of the form of Bharathahatyam which is celebrated as the classical dance of Tamil Nadu.

2. Born on 26th November] 1937 in Viralimalai, Pudukottai district of Tamil Nadu, Smt. Muthukkannammal studied upto 7thstranded and her Arangetram (first performance) took place at the age of seven. She was dedicated to Viralimalai Murugan Temple, when she was seven years old. She served alongside 32 dancers in the Murugan temple at Viralimalai.

3. The unique characteristic of Sadir performance is that the performer not only dances but also sing along simultaneously , which Smt. Muthukannammal is able to do even at the age of 84. She remembers songs in different languages and the gestures of the dance form though no one performs these pieces anymore. She recalls rare and precious compositions during her performances from her repertoire. Sadir dance is not limited to just Tamil language. It has various compositions from languages such as Sanskrit, Telugu, Hindi, Mathili and Marathi. She has all of these pieces both in her memory and in her present repertoire.

4. Smt. Muthukannammal has more than 1000 performances to her credit in the last 75 years, having performed at many temples and public venues in Tamilnadu and Kerala. She has conducted many Sadir workshops in Chennai, Coimbatore and Bangalore. She follows the traditional format of Adavu, Allarippu, Jathiswaram, Sabdam, Varnam, Padam, Thillana and Notuwaram (Unique style Sadir Dance with English notation), Nalanguunjal Songs Varieties for temple celebrations, Modi Song (Snake Dance), Viralimalai Kuravanji performance. She knows many performances like Kummi, Kolattam (Stick Dance), Kayatru Pinnal (Plaiting of Rope), Ammanai (Ball Game) all of which have significance in Temple festivals.

5. A book on Smt. Muthukannmamal titled "Unfinished gestures" has been written by scholar and academic, Davesh Soneji. In 2018, she received the "Dakshin Chitra Viruthu" from Dakshinchitra Art Foundation, Chennai. In the year 2019, Films Division Ministry of Information and Broadcasting made a 66 minute documentary film about her Art and life titled: "Deveradiyaar in Sadir -The life and Art of Muthukannammal". She received the "Kalai Mudumani" award from the Tamilnadu Art and culture Department, Pudukottai District in the year 2018-2019. Several research papers and presentations have been presented that feature her by scholars such as Dr.Hari Krishnan, Wesleyan University, Dr. Davesh Soneji, University of Pennsylvania and Dr. A P Rajaram.

पद्म श्री

श्रीमती रा. मुथ्थुक्कन्नम्माल

श्रीमती रा. मुथ्थुक्कन्नम्माल, वर्तमान तमिलनाडु राज्य में एक सदी से भी कम समय पहले वाली देवराडियार अवधारणा को मानने वाली अंतिम जीवित प्रतिमान हैं। वह उन अंतिम कुछ महिलाओं में से हैं, जिन्होंने खुद की ''देवदासी''के रूप में अपनी पहचान बनाई है और वह उन वंशानुगत समुदायों से संबंधित हैं, जिनमें मंदिर और दरबार नृत्य की प्रदर्शनकारी परंपराएँ थीं जिन्हें सादिर के नाम से जाना जाता था। भरतनाट्यम सादिर का पुनर्कल्पित/पुनर्निर्मित रूप है। श्रीमती मुथ्थुक्कन्नम्माल भारत में एकमात्र जीवित सादिर नृत्य प्रतिपादक हैं। श्रीमती मुथ्थुक्कन्नम्माल ज्ञान के भण्डार के समान हैं, जो हमें तमिलनाडु के शास्त्रीय नृत्य भरतनाट्यम के रूप में पुराने इतिहास के बारे में सिखाती हैं।

2. 26 नवम्बर, 1937 को तमिलनाडु के पुदुकोट्टई जिले के विरालीमलाई में जन्मी, श्रीमती मुथ्थुक्कन्नम्माल ने सातवीं तक पढ़ाई की और उन्होंने अपना अरगेत्रम (पहला प्रदर्शन) सात वर्ष की उम्र में किया। उन्होंने विरालीमलाई के मुरूगन मंदिर में 32 नर्तकियों के साथ अपनी सेवा दी।

3. सादिर प्रदर्शन की अनूठी विशेषता यह है कि कलाकार न सिर्फ नृत्य करता है बल्कि साथ में गाता भी है, जिनमें श्रीमती मुथ्थुक्कन्नम्माल 84 वर्ष की उम्र में भी सक्षम हैं। उन्हें विभिन्न भाषाओं में गाने और नृत्य रूप के आंगिक मुद्राएं आती हैं, यद्यपि कोई भी इन अंशों को अब नहीं करता है। वह अपने प्रदर्शनों में, दुर्लभ और अमूल्य कृतियों को प्रस्तुत करती हैं। सादिर सिर्फ तमिल भाषा तक ही सीमित नहीं है। इसमें संस्कृत, तेलुगू, हिंदी, मैथिली और मराठी जैसी भाषाओं की विभिन्न रचनाएं हैं। ये सभी रचनाएं उनकी स्मृति में और उनके वर्तमान प्रदर्शनों की सूची में शामिल हैं।

4. श्रीमती मुथ्थुक्कन्नम्माल ने पिछले 75 वर्षों में 1000 से अधिक प्रदर्शन किए हैं जिनमें उनके कई प्रदर्शन तमिलनाडु और केरल के विभिन्न मंदिरों और सार्वजनिक स्थानों में हुए हैं। उन्होंने चेन्नई, कोयम्बटूर और बंगलुरू में कई सादिर कार्यशालाएँ आयोजित की हैं। वह अदावु, अल्लारिपु, जतिस्वरम, सबदम, वर्णम, पदम, तिलाना और नेतुवरम (अंग्रेजी नोटेशन के साथ सादिर नृत्य की अनूठी शैली), मंदिर समारोहों के लिए नालंगुंजल गाने की किस्में, मोदी गीत (सांप नृत्य), विरालीमल्लई कुरवानजी प्रदर्शन के पारंपरिक रूप का अनुसरण करती हैं। वह कुम्मी, कोलाट्टम (स्टिक डांस), कायत्रुपिनाल (रस्सी की प्लेटिंग), अम्मानई (बॉल गेम) जैसे कई प्रदर्शनों में पारंगत हैं, जिनका मंदिर के त्योहारों में विशेष महत्व है।

5. श्रीमती मुथ्थुक्कन्नम्माल पर एक पुस्तक ''अनफिनिश्ड जेस्चर' विद्वान और शिक्षाविद दवेश सोनेजी द्वारा लिखी गई है। वर्ष 2018 में उन्हें दक्षिण चित्र कला फाउंडेशन, चेन्नई से ''दक्षिण चित्र विरूतु'' प्राप्त हुआ। वर्ष 2019 में, सूचना और प्रसारण मंत्रालय के फिल्म प्रभाग ने उनकी कला और उनके जीवन के बारे में 66 मिनट की एक वृत्तचित्र बनाया जिसका शीर्षक थादृसादिर में देवरदियारदृ मुतुकनम्मल का जीवन और कला''। उन्हें वर्ष 2018–19 में तमिलनाडु कला और संस्कृति विभाग, ''कलाई मुदुमनी'' पुरस्कार मिला। कई शोध पत्रों और प्रस्तुतियां में डॉ. हरि कृष्णन, वेस्लेय विश्वविद्यालय, डॉ. दवेश सोनेजी, पेनसिल्वानिया विश्वविद्यालय तथा डॉ. ए.पी. राजाराम जैसे विद्वानों द्वारा उनका वर्णन किया गया है।